दलित, भूमंडलीकरण के आइने में

रंजीत कुमार राम*

भारतीय समाज और संस्कृति विभिन्नताओं से भरा है। किसी समाज के पूर्ण विकास के लिए आवश्यक है कि उस समाज के सभी समुदायों की उन्नति हो, उसका विकास हो। यदि समाज के किसी एक समुदाय का भी विकास या उन्नति नहीं हुआ हो तो उस समाज को सभ्य, विकसित और पूर्ण समाज नहीं कहा जा सकता है। भारतीय समाज में इसका अभाव हैं। भारत में स्वचेपकमक विकास हुआ हैं। एक को सर्वश्रेष्ठ, संसाधन संपन्न, तो दूसरा वर्ग निम्न, संसाधन विहिन, वंचित और बहिष्कृत हैं। भारत में दलित कहा जाने वाले एक बहुत बड़ा तबका है, जो सदियों से वंचित और हाशियें पर रहा हैं। इस भूमंडलीकरण के युग में भी इनकी स्थिति कमोंवेश वैसी ही है। अनेक विद्वानों ने भूमंडलीकरण को साम्राज्यवाद का नया अवतार कहा है, वहीं भारत के संदर्भ में वर्ण–व्यवस्था और ब्राह्मणवाद का नवीनीकरण की संज्ञा दिया हैं।

दलित शब्द की उत्पत्ति और अर्थ

'दलित' शब्द का आधुनिक समय में उल्लेख सर्वप्रथम ईस्ट इंडिया कंपनी के सैन्य अधिकारी जे० जे० मोल्सवर्थ ने 1831 ई० में एक मराठा अंग्रेजी शब्दकोश में किया। इसके अतिरिक्त दलित के मसीहा माने जाने वाले महात्मा ज्योतिबा फूले ने भी इस शब्द का प्रयोग किया था। जिसके बाद ब्रिटिश सरकार ने भी इसका उल्लेख किया था– ''भारत सरकार के विशेष निर्देशों के तहत, जो उनके विषय में और अधिक सूचना चाहती थी। 1931 की जनगणना में तीस पृष्ठों का एक पूरा परिशिष्ट उन व्यक्तियों के लिए था। जिन्हें जनगणना कमिश्नर जे. एच. हट्टन ने ''बाह्य जातियाँ'' कहा।''1

सर्वप्रथम भारत में बहिष्कृत जाति एवं जनजाति की गणना 1911 ई. में किया गया और सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक अन्य रुपों से भिन्नता पाई गई। ''1911 की जनगणना में उन जातियों एवं जनजातियों की अलग गणना प्रस्तुत की जो जातीय हिन्दू धर्म के कुछ पहलुओं से या तो अनुरूपता नहीं रखते थे अथवा बहिष्कृत किये गये थे।''2

***शोधार्थी, यूजीसी, नेट, बी०आर० अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।**

डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अपने भाषणों में इस शब्द का प्रयोग किया जिससे इसका प्रचलन बढ़ा। कुछ जानकार बताते हैं कि 1921 से 1926 के बीच दलित शब्द का प्रयोग स्वामी श्रद्धानंद ने भी किया था। जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के एक इतिहासकार कहते हैं– 'दलित' शब्द बौद्ध ग्रंथ के ' धुल्लवग्गा विनम पिटक' में पाया जाता है।

'दलित' शब्द अंग्रेजी के 'डिप्रेस्ड क्लास' का हिन्दी अनुवाद है। डिप्रेस्ड क्लास की जनगणना 1911 ई. में की गई थी। जिन्हें भारतीय संविधान में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति कहा जाने लगा है। शब्दकोष के अनुसार हिन्दी में दलित का अर्थ है– पीड़ित, शोषित, दबा हुआ, खिन्न, उदास, टुकड़ा खंडित, तोड़ना, कुचलना, दला हुआ, विनष्ट हुआ इत्यादि। भारतीय समाज का यह एक ऐसा वर्ग है जो अपने ही स्वधर्मी द्वारा जीवन के सभी पहलुओं से वंचित किया गया जिसका उदाहरण विश्व इतिहास में नहीं है।

भूमंडलीकरण– भूमंडलीकरण एक प्रक्रिया है। इसमें आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलू शामिल है। इसके अन्तर्गत एक देश विश्व की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था से जुड़ता है। यह प्रक्रिया मूलतः आर्थिक क्षेत्रों में आया या यूँ कहें कि एक देश अपनी अर्थव्यवस्था को विश्व अर्थव्यवस्था के साथ जोड़ने की प्रक्रिया है। लेकिन इसका प्रभाव समाज के विभिन्न पहलुओं पर दिखता है। भूमंडलीकरण का प्रभाव समाज ही नहीं व्यक्ति के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर पड़ा है। इसने क्या ग्रामीण, क्या शहरी थोड़ा–बहुत सबके जीवन पद्धति को साकारात्मक और नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है।

भूमंडलीकरण का विकास सूचना प्रौद्योगिकी में हुए द्रूत गति से हुए विकास की देन है। वस्तुतः सूचना प्रौद्योगिकी का विकास नहीं हुआ होता, तो आधुनिक समय में भूमंडलीकरण का विकास नहीं हो पाता। भूमंडलीकरण के विकास के लिए निजीकरण का होना आवश्यक था। निजीकरण के लिए सरकार लाइसेंस, परमिट और व्यापार नीति को उदार बनाना पड़ता है। श्रम नीति में भी बदलाव की आवश्यकता पड़ती है। उनके कार्य करने के समय, सामाजिक सुरक्षा, बार्गेनिंग क्षमता, कार्य क्षमता और अन्य क्षेत्रों को भी प्रभावित करती है। जिससे श्रमिकों के जीवन स्तर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

भूमंडलीकरण से राज्य की सम्प्रभुता पर भी आघात पहुँचता है। क्योंकि राज्य के गोपनीय सूचना को आसानी से प्राप्त किया जाता है जबकि एक पक्ष यह भी है कि भूमंडलीकरण से राज्य (संप्रभुता) मजबूत हुआ है क्योंकि राज्य समस्त नागरिकों के सूचना प्राप्त कर और अधिक मजबूत हुआ है।

अब प्रश्न है कि भारत में भूमंडलीकरण के प्रभाव से दलित कैसे प्रभावित हुए? भारत एक ग्राम प्रधान के साथ–साथ कृषिप्रधान देश रहा है। भूमंडलीकरण का सबसे नकारात्मक प्रभाव यदि कहीं पड़ा है तो वह इसके कृषि क्षेत्र पर....। भारत में अधिकांश दलित गाँवों में निवास करते हैं और वे अधिकांशतः कृषि मजदूर के रूप में कार्य करते हैं।

कृषि उपकरण, खाद्य, बीज और कीटनाशक इत्यादि का उत्पाद बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा किया जाता है। पहले जहाँ बीज स्वयं किसान उत्पादन कर लेते थे, वहीं अब यह बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा किया जाता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा उत्पादित बीज एक किलोग्राम की कीमत एक क्वीन्टल तक के कीमत से लगभग बराबर चुकाना पड़ता है। कीटनाशक और अन्य रसायनों का प्रयोग करते हैं इसके लिए ऊँची कीमत चुकाना पड़ता है। समाचार–पत्रों और विभिन्न मीडिया के माध्यम से जानकारी प्राप्त होता है कि किसानों के आत्महत्या की प्रतिशत साल दर साल बढ़ते ही जा रहा है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार 16.66 करोड़ अनुसूचित जाति की आबादी है जिसके अधिकांश जनसंख्या दिहारी मजदूर है। जब किसान की हालात दयनीय है तो उस पर निर्भर मजदूर की स्थिति का सिर्फ अनुमान ही लगाया जा सकता है।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि वर्तमान भारत सरकार और भूमंडलीकरण के समर्थकों का मानना है कि किसान अपना उत्पाद बड़ी कम्पनी या व्यापारी से सीधे–सीधे बेच सकती है। अब प्रश्न उठता है कि हमारे किसान इसके लिए कितना तैयार है, मझले किसान और छोटे किसान के उत्पाद का क्या होगा? क्या इसके लिए बाजार, संसाधन, मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध है?

उस छोटे से फुटपाथ पर दुकानदारी करने वाले जिसकी दुनिया फुटपाथ पर होती है। आजकल मॉल में साग खरीदना लोग पसंद करते हैं लेकिन किसान उससे ताजी साग को फुटपाथ पर बेचता है। उससे लोग खरीदने में कतराते रहते हैं। किसान से तो मोलभाव तो करते हैं किन्तु मॉल में अधिक मूल्य वहन कर गौरवान्वित महसूस करते हैं। यह भूमंडलीकरण का ही प्रभाव है।

भूमंडलीकरण के लिए निजीकरण का होना आवश्यक है निजीकरण के लिए श्रम कानून में भी ढील देनी पड़ती है। निजीकरण के चलते श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा, सार्वजनिक भागीदारी और सामाजिक विविधता जैसे मूल सिद्धांत को नकारता है। (जहाँ भूमंडलीकरण का जन्म हुआ (यूरोप में) अमेरिका में वहाँ सामाजिक विविधता जैसे प्रश्नों का हल कर चुका है) दलित समुदाय को पुनः समाज के हाशिये पर और वंचित बनाता है– ''अनुमान के अनुसार केवल 60 से 70 दिन तक ही काम मिलता है, शेष दिनों में खाली–जैसा है जिसके

परिणामस्वरूप मजदूरों की बारगेनिंग क्षमता कम हुई है और परिणामस्वरूप 15 से 20 रुपये में दिन भर काम करना पड़ता है। इससे पूरी परिस्थिति बदली है। जब गाँव में गुजारने लायक काम नहीं मिल पाता, तो शहर में पलायन करना और विस्थापितों का सा जीवन बिताने पर विवश हैं। एक तरफ तो जवान व बलिष्ठ पुरुष शहर में अकेलेपन और तनावपूर्ण जीवन बिताने को अभिशप्त हैं, तो दूसरी तरफ घर–परिवार की सारी जिम्मेवारी औरतों पर आने से वे जवानी में ही बुढ़ा रही हैं।''3

किसी वर्ग के विकास और उन्नति के लिए शिक्षा का होना अतिआवश्यक है, इसीलिए महान् पुरुषों ने विशेषकर ज्योतिबा फुले और डॉ० आम्बेडकर ने शिक्षा पर सबसे अधिक जोर दिया था। यह सौ प्रतिशत सत्य है कि दलितों में जो शिक्षा का प्रसार हुआ है वह सार्वजनिक ढाँचे से ही। वैश्वीकरण की नीतियों ने इसे तहस–नहस की कोशिश की है, जिससे दलितों पर दोहरी मार पड़ी है। शिक्षा के क्षेत्रों में बजट कम करना, स्कॉलरशिप खत्म करना, छात्र के अनुपात में शिक्षक का न होना इत्यादि। निजी हाथों में शिक्षा इतनी महंगी हो गई है कि गरीब दलित उसे नहीं खरीद सकता। शिक्षा महंगी होने से ज्ञान पूरी तरह सम्पन्न लोगों के लिए आरक्षित हो गया है और दलितों को इससे बाहर धकेल दिया गया है।

यह संयोग मात्र ही कहा जा सकता है भारत में भूमंडलीकरण के विरोध को दबाने के लिए गुरु और गुरुआनी (महिला गुरु) का उभार होना, एक नई प्रवृत्ति है। आश्चर्य की बात यह है जहाँ बिजली और सड़क की पहुँच नहीं है, वहाँ इनका आश्रम मिल जाएगा। वे ब्राह्मणवादी व्यवस्था को ही सही ठहराता है और उसकी स्थापना के लिए भरपूर कोशिश करता है। रजनी कोठारी कहते हैं– ''भूमंडलीकरण की प्रक्रिया इस समय उफान पर है और सारी दुनिया में सरकारें उसे एक मॉडल के रूप में स्वतः स्वीकार कर रही है। तीसरी दुनिया की सरकारों की यही स्थिति है। भूमंडलीकरण के सांस्कृतिक परिणामों के कारण हम सभी जगहों पर प्रभुत्व और हिंसा की वर्चस्वी संरचनाओं में वृद्धि देख सकते हैं। इस नक्कारखाने में छोटी, कमजोर और स्थानीय आवाजों का दबा जाना रोजमर्रा की बात है। वर्चस्वी संरचनाएँ हाशिये पर पड़े हुए समुदायों, वर्गों और जातियों के हितों को रौंद कर ही अपना स्वार्थ–साधना करती है। भूमंडलीकरण दलित जातियों के खिलाफ न केवल वर्णाश्रम के दायरे में ब्राह्मणवादी ताकतों का समर्थन करता है, वरन् दरिद्रीकरण, अलगाव और अन्याय के संदर्भों में भी उन्हें कोने में धकेलता जाता है। विश्व और विश्व–व्यवस्था जितनी एकीकृत होती जाएगी, दलित सरीखे समुदायों की वंचना उतनी ही बढ़ती चली जायेगी।''4

भूमंडलीकरण से दलितों के रोजगार समाप्त हुआ है उसमें जो हस्तकला था जैसे टोकरी, बुनना, डगरा, सूप और अन्य छोटे–छोटे हाथ से किए जाने वाले उद्योग को समाप्त ही कर दिया है। भूमंडलीकरण के चलते ये सारी वस्तुएँ जो हाथ से बुना या बनाया जाता था आज बड़ी–बड़ी फैक्ट्रियों में निर्माण किया जाता है। एक मजेदार बात यह है कि उपला जिसे अक्सर दलित महिलाएँ पाथति है। वह बाजार में नहीं बेच सकती पर उसे भी फिलिप कार्ड और और आमेजन जैसे व्यापारिक जाल में महँगे दामों में बेचती हैं।

भारत में दलितों का विकास जो दिखता है वह सार्वजनिक संस्थाओं में भागीदारी से हुआ। सरकार सार्वजनिक संस्थाओं को निजीकरण कर दलितों को हाशिये पर धकेलने की साजिश कर रही है।

भूमंडलीकरण से सांस्कृतिक क्षेत्र में बदलाव देखा गया है। अमेरिका का नीली जींस भारत के लोग पहनते हैं तो अमेरिका में लोग जींस पर खादी के कुर्त्ता। दलित कहे जाने वाले समुदाय भी जींस खादी में क्रूरता और हाफ पैंट पहन कर घूमता है परंतु दलित (सेना में जवान भी) घोड़ी पर चढ़ कर शादी करने न देने और गौरवा देखने, मूँछें रखने पर हत्या तक कर दी जाती है।

भारत में भूमंडलीकरण को नव ब्राह्मणवाद या वर्ण–व्यवस्था का नया स्वरूप कहा गया है। भारत में दलित वर्ग के संदर्भ में योग्यता और वस्तु विभिन्नता की बात करते है। भारतीय समाज के लिए यह सत्य है कि आज भी योग्यता उच्च जाति में निवास करती है ऐसा वर्ण–व्यवस्था के समर्थक सोचते हैं। यह कारण है कि आज भी दलितों का मीडिया, न्यायपालिका और अन्य निर्णय निर्माण की प्रक्रिया में नगन्य हैं। उच्च जाति के योग्यता पर आशंका व्यक्त करते हुए खुशवंत सिंह 1990 में 'ब्राह्मण पॉवर' शीर्षक से लिखे एक लेख में कहा– ''ब्राह्मणों की जनसंख्या हमारे देश भी कुल जनसंख्या में से 3.5 प्रतिशत से अधिक नहीं है लेकिन आज वे 70 प्रतिशत नौकरियों पर काबिज हैं। मैं यह मानकर चलता हूँ कि यह आँकड़ा केवल राजपत्रित पदों का है। उपसचिव से ऊपर के उच्च प्रशासनिक पदों पर 500 में से 310 ब्राह्मण है यानी 62 प्रतिशत, 26 प्रदेश मुख्य सचिवों में से 19 ब्राह्मण है, 27 राज्यपाल और उपराज्यपालों में से 13 ब्राह्मण हैं, सर्वोच्च न्यायालय के 16 न्यायधीशों में से 9 ब्राह्मण हैं, 330 उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों में से 166 ब्राह्मण हैं, और 140 राजपूतों में से 58 ब्राह्मण हैं। कुल 3300 भारतीय प्रशासनिक अधिकारियों में 2376 ब्राह्मण हैं। निर्वाचित पदों पर भी इनका प्रदर्शन इतनाही बढिया है। 508 लोकसभा सद्स्यों में से 190 ब्राह्मण हैं, 244 राज्यसभा सद्स्यों मे से 89 ब्राह्मण हैं। ये ऑकड़े साफ तौर पर सिद्ध करते हैं कि भारत के 3.5 प्रतिशत ब्राह्मण समुदाय का देश में उपलब्ध बढ़िया नौकरियों पर कब्जा है। ऐसा

कैसे हो गया, ये मुझे नही मालूम, लेकिन मेरे लिए यह विश्वास करना मुश्किल है कि यह सब ब्राह्मणों की कुशाग्त बुद्धि की वजह से ही हुआ है।''5

डॉ० आम्बेडकर जैसे विद्वानों का मानना था कि भारत जब शहरीकरण होगा तो जाति व्यवस्था होगा। सामाजिक बुराई समाप्त हो जायगी। भूमंडलीकरण के समर्थक का भी यही मानना हैं। परंतु जब दीपक मलघन और अंदलीब रहमान द्वारा : एक शोधः–

"Isolated by caste:- Neighbourhood-scale Residention segregation in Indian metors" किया गया शोध जो 2011 की जनगणना के आधार ब्लॉक स्तर के आकड़ों का विश्लेषण करते हुए, भारत के विभिन्न शहरों कॉलोनियों में दलित वर्ग का नदारत होना जातिवाद का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। **उदाहरण स्वरूपः–**

- कोलकाता की 60 प्रतिशत कॉलोनियों में कोई दलित नहीं रहता
- बेगलुरू में 20 प्रतिशत कॉलोनियों में दलित नहीं रहते
- गुजरात के शहरों में सबसे ज्यादा जाति भेद है वहाँ दलित और स्वर्ण अलग–अलग रहते है।''6

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भूमंडलीकरण का प्रभाव निश्चित रूप से दलित वर्ग पर प्रतिकूल पड़ा है। उन्हें शिक्षा से वंचित किया है शिक्षा का बाजारीकरण करके। विकास के नाम पर सार्वजनिक सम्पति को बेचा जा रहा है। वही दूसरी ओर समाज में संग्राम छिड़ा हुआ है। दलित वर्ग इस आन्दोलन में अपनी सक्रिय भूमिका निभा रहा है। इसमें सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम अग्रणी भूमिका निभाई है। यह संभव दिखती है पूरे समाज का भविष्य दलित वर्ग के हाथ में होगा।

संदर्भ सूची

1. एस. एम. माइकल (सं) आधुनिक भारत में दलित दृष्टि एवं मूल्य (द्वितीय संस्करण) अनुवादः– विजय कुमार पंत, रावत पब्लिकेशन जयपुर, 2010 पृ० संख्या– 61
2. वही पृ० संख्या– 60
3. डॉ० सुभाष चन्द्र, दलित मुक्ति आन्दोलन सीमाएं और संभावनाएं आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा) प्रथम संस्करण, 2010, पृष्ठ संख्या– 103
4. अभय कुमार दुबे (संपादक), आधुनिकता के आइने में दलितः वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2005 पृ० संख्या– 394 रजनी कोठारी का लेख, ''जाति के भूमंडलीय पहलू''
5. अरुंधति रॉय, अनुवादः अनिल यादव 'जयहिंद', रतन लाल, एक था डॉक्टर एक था संत, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली, 2019, पृ० संख्या– 26
6. उद्धृत, दिलीप मंडल के पाठशालाः द प्रिंट 5 मार्च 2020